परिसंवादः [१७]

संस्कृतसाहित्ये श्रमण-परम्पराया अवदानम्

कुलपतेः प्रो. यदुनाथप्रसाददुबेमहोदयस्य पुरोवाचा विभूषितम्

सम्पादकः
प्रो. रमेशकुमारद्विवेदी

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, वाराणसी

ISBN : 81-7270-295-7

Research Publication Supervisor—
Director, Research Institute
Sampurnanand Sanskrit Vishvavidyalaya
Varanasi.

❐

Published by—
Dr. Padmakar Mishra
Director, Institute of Academic, Research & Publication.
Sampurnanand Sanskrit Vishvavidyalaya
Varanasi- 221002

❐

Available at—
Sales Department,
Sampurnanand Sanskrit Vishvavidyalaya
Varanasi- 221002.

❐

First Edition : 500 Copies
Price : Rs. 332=00

❐

Printed by--
Ashirvad Printers
Meerapur Basahi, Varanasi .

18. **गद्य चिन्तामणि की काव्य शैली** 117-136
डॉ0 अशोक कुमार जैन
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

19. **बौद्ध साहित्य में श्रमण परम्परा** 137-140
डॉ0 लक्ष्मीशंकर उपाध्याय
म0गाँ0का0 विद्यापीठ, वाराणसी

20. **संस्कृत जैन कोश-साहित्य परम्परा और उसका वैशिष्ट्य** 141-154
डॉ0 अनेकान्त कुमार जैन
श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
कुतुबसांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-16

21. **संस्कृत साहित्य में बौद्ध-दार्शनिकों का योगदान** 155-162
डॉ0 रमेशचन्द्र नेगी
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय सारनाथ, वाराणसी

22. **संस्कृत साहित्य में बौद्ध दर्शन का योगदान** 163-166
डॉ0 महेश कुमार श्रीवास्तव
बी. आई. टी. ई. निबाह पिण्डरा, वाराणसी

23. **संस्कृत-साहित्य के विकास में जैनाचार्यों का योगदान** 167-174
डॉ0 मारकण्डेय नाथ तिवारी
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ,
कुतुबसास्थानिक क्षेत्र-नव देहली-16

24. **डॉ0 भीमराव अम्बेडकर एवं बौद्ध धर्म** 175-177
डॉ0 शोभनाथ पाठक
डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

25. **बौद्ध साहित्य में वर्णित काशी की समृद्धि एवं महात्मा बुद्ध की शिक्षायें** 178-184
डॉ0 लतापंत तैलंग
सं.सं.वि.वि., वाराणसी

26. **अभिधर्मकोश में 'रूप' का विवेचन** 185-189
अनिमेश प्रकाश
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

संस्कृत-साहित्य के विकास में जैनाचार्यों का योगदान

डा0 मारकण्डेय नाथ तिवारी
सहायक आचार्य
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली-110016

भारतीय मनीषी प्राचीनकाल से ही संस्कृत साहित्य के सम्पोषण एवं सम्वर्धन में सतत् प्रयत्नशील रहे हैं। साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। अतएव सामाजिक विचारधाराओं के अनुरूप ही लेखक साहित्य निर्माण करता है। प्राचीन इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि संस्कृत भाषा ही वार्तालाप की सम्वाहिका थी। संस्कृत भाषा समाज में पूर्णरूपेण समादृत थी, इसलिए अन्य भाषाओं का प्रचलन होते हुए भी लेखक या कवि संस्कृत रचना द्वारा समाज में विशेष रूप से प्रतिष्ठित होता था। जैन धर्म का अभ्युदय होने पर जैन साहित्य की भाषा अर्धमागधी या प्राकृत थी, फिर भी जैनाचार्यों ने संस्कृत भाषा का आश्रय लेकर संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि किया। इस क्रम में जैनाचार्यों ने स्तोत्र, काव्य, कथा, चरित्र, नाटक, पुराण, छन्द, अलंकार, व्याकरण एवं दर्शन से सम्बन्धित साहित्यिक ग्रन्थों का प्रणयन किया। जिससे यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि जैन संस्कृत वाङ्मय अत्यन्त विशाल एवं समृद्ध है। सम्प्रति राजस्थान के जैन ग्रन्थालयों में अत्यधिक संख्या में संस्कृत पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं, जिसका पुनरुद्धार शोध एवं प्रकाशन द्वारा किया जा सकता है। जैनाचार्यों के विशिष्ट योगदान को अधोलिखित क्रम में वर्गीकृत किया जा सकता है–

स्तोत्र-साहित्य–

विक्रम की द्वितीय शताब्दी के आचार्य ''कविमगमकवादिवाग्मित्वगुणा-लंकृत'' की उपाधि से विभूषित समन्तभद्र के समय से जैन स्तोत्र साहित्य का प्रारम्भ माना जाता है। इन्होंने चार स्तोत्रों की रचना की है।

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

MSK-003

दर्शन : न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

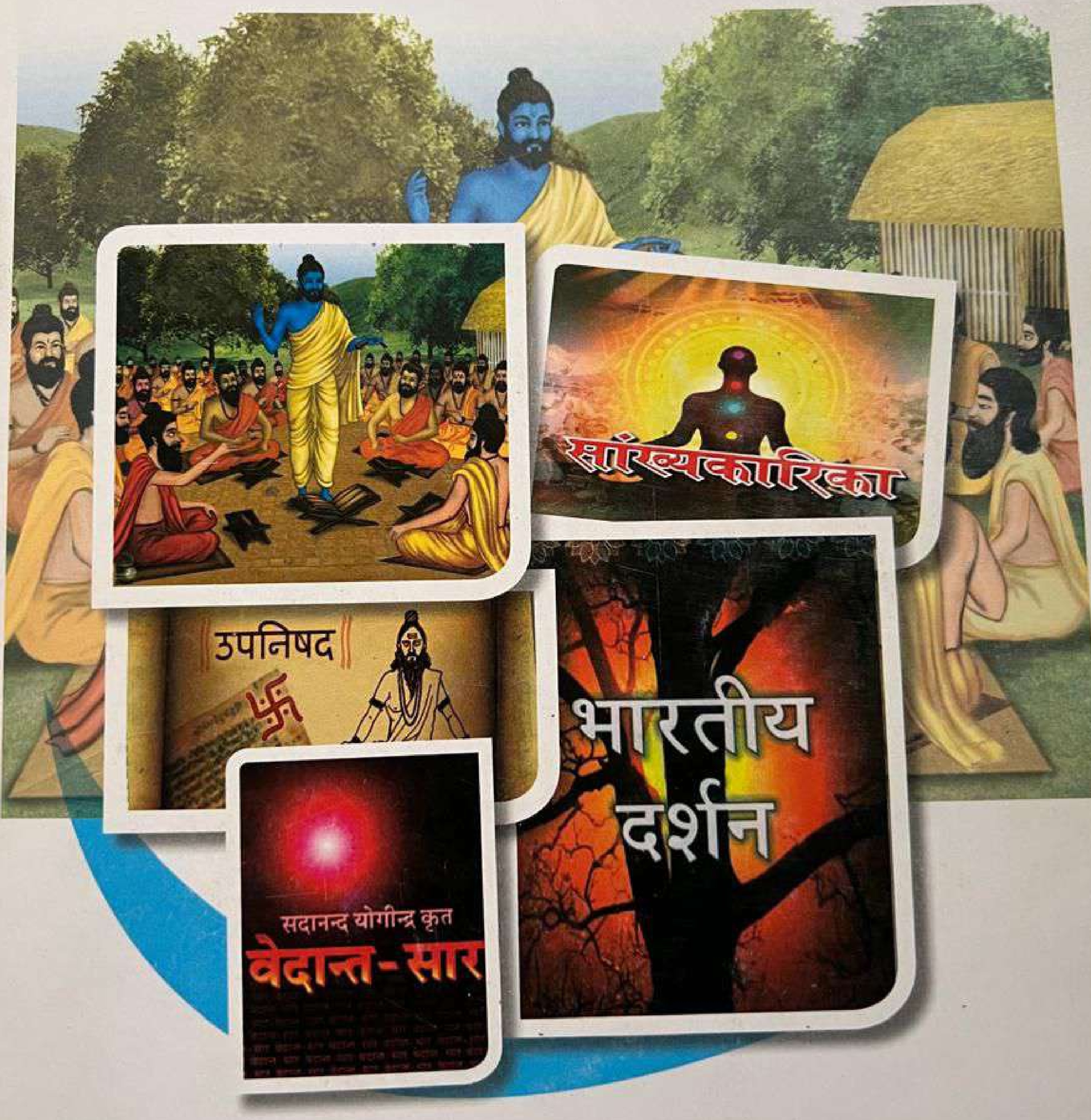

भाग–2

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

MSK-003
दर्शन : न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

भाग 2

दर्शन : न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

खंड 4

सांख्यकारिका (ईश्वरकृष्ण) 3

खंड 5

अर्थसंग्रह (लौगाक्षिभास्कर) 131

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी
भूतपूर्व कुलपति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

प्रो. रमाकान्त पाण्डेय
प्रोफेसर, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र
भूतपूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

प्रो. दीप्ति त्रिपाठी
भूतपूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

प्रो. सत्यकाम,
हिन्दी संकाय, मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली।

कार्यक्रम संयोजक

प्रो. सत्यकाम,
प्रोफेसर, हिन्दी संकाय, मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक	इकाई संख्या
प्रो.मार्कण्डेय नाथ तिवारी प्रोफेसर, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।	16, 17, 19, 22
डॉ. अजय कुमार झा सहायक प्रोफेसर, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।	18, 21
डॉ. प्रमोद कुमार सिंह सहायक प्रोफेसर, मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।	20, 23
प्रो. शिवशंकर मिश्र प्रोफेसर, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।	24, 25, 26

पाठ्यक्रम संयोजक	पाठ्यक्रम सम्पादक
प्रो. सत्यकाम प्रो. जगदीश शर्मा	प्रो. जगदीश शर्मा प्रोफेसर, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज
सहायक कुल सचिव (प्रकाशन)
सा.नि. एवं वि. प्र. इग्नू, नई दिल्ली

श्री यशपाल
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
सा.नि. एवं वि. प्र. इग्नू, नई दिल्ली

अक्टूबर, 2020

©इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN-978-93-90773-36-7

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

मानविकी विद्यापीठ एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कंप्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक : अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिषर्स प्रा. लि., डब्लू–30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–2, नई दिल्ली–110 020

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

MSK-003
दर्शन : न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

खंड

4

सांख्यकारिका (ईश्वरकृष्ण)

इकाई 16
ईश्वरकृष्ण और सांख्यकारिका 5

इकाई 17
त्रिविध दुःख और सांख्यशास्त्र के मुख्य प्रतिपाद्य विषय 20

इकाई 18
प्रमाण निरूपण 33

इकाई 19
सत्यकार्यवाद 47

इकाई 20
व्यक्त, अव्यक्त और गुणत्रय 56

इकाई 21
सृष्टिक्रम 74

इकाई 22
प्रत्ययसर्ग 91

इकाई 23
भोग एवं अपवर्ग 106

गंगेश्वरगौरवम्

आचार्य पं. गंगेश्वरपाण्डेय अभिनन्दन ग्रन्थ

सम्पादक

महामहोपाध्याय प्रो. जयप्रकाशनारायण द्विवेदी

© कॉपीराइटः
श्रीनाथ संस्कृत महाविद्यालय,
हाटा - कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

ISBN No. 978-81-956738-4-1

प्रकाशन तिथि :
मार्गशीर्ष शुक्ल पञ्चमी, दि. 17.12.2023

मूल्य : 1000/-

प्रकाशक
अभ्युदय प्रकाशन
C-2/3, विजय एन्क्लेव, पालम डाबड़ी मार्ग
नई दिल्ली-110045

- ❖ **साक्ष्य-साक्षी विवेकः** 352
  - श्री अभिषेक कुमार चतुर्वेदी, श्री अवधेश प्रताप सिंह, रीवा विश्वविद्यालय, रीवा, म. प्र.
- ❖ **पर्सनेलिटी एनालिसिस थ्रो एनसिएन्ट एण्ड मार्डन साइंस** 360
  - डॉ. पवन द्विवेदी, प्रो. एवं डायरेक्टर, पारुल यूनि. बडोदरा, गुजरात
- ❖ **न्यू एजुकेशन पालिसी 2020** 371
  - श्री राजेश कुमार शर्मा, प्राचार्य, रूद्रपुर खजनी पी.जी.कॉलेज
- ❖ **शिक्षा तथा इसकी व्यवस्था ऐसी क्यों?** 378
  - श्री शिव प्रसाद शुक्ल, कार्यकारिणी सदस्य, श्रीनाथ सं. महाविद्यालय, हाटा कुशीनगर
- ❖ **यागेषु दक्षिणाविचारः** 381
  - डॉ. रामराज उपाध्याय, श्रीला.ब.शा.रा.सं.वि.वि., नई दिल्ली
- ❖ **वैदिक धर्म और दर्शन** 386
  - श्री योगेन्द्र मिश्र, प्रधानाचार्य, आदर्श ई. का., उ.प्र.
- ❖ **धर्म एवं अध्यात्म के आलोक में देवभूमि मिथिला** 389
  - श्री मोहन पाण्डेय "भ्रमर", स.प्रो. श्रीनाथ सं. महाविद्यालय, हाटा कुशीनगर
- ❖ **आहार की उपयोगिता** 398
  - डॉ. भागवत मिश्र, अध्यापक, इ.का. वोदरवार
- ❖ **माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि..........** 404
  - श्री रजनीश कुमार पाण्डेय
- ❖ **A literary analysis of marginalised women..........** 419
  - सुश्री हर्षिता पाण्डेय, एल.बी.एस., नई दिल्ली
- ❖ **वर्तमान सन्दर्भे सांख्यदर्शनस्य प्रासङ्गिकता** 429
  - प्रो. मार्कण्डेयनाथ तिवारी, विभागाध्यक्ष, सांख्ययोग विभाग, श्री ला.ब.शा.रा.सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- ❖ **एक कर्मयोगी का व्यक्तित्व एवं वंश परम्परा** 434
  - ई. लालबिहारी पाण्डेय, ग्राम फुलवरिया, लक्ष्मीगंज
- ❖ **चित्रविथी - IV** 440

* * *

वर्तमानसन्दर्भे सांख्यदर्शनस्य प्रासङ्गिकता

– प्रो० मार्कण्डेयनाथतिवारी

अयि तत्त्वजिज्ञासवः सज्जनवृन्दाः विद्वांसो विदुष्यश्च। मनुष्यजीवनं हि बाहुल्येन दुःखमयमेवास्ति। अत एव भारतीयदर्शनेषु दुःखस्यास्तित्वमङ्गीकृत्य तदपाकरणायानेके उपायाः प्रतिपादिताः सन्ति। बौद्धदर्शनस्य प्रणेता भगवता बुद्धेन दुःखदूरीकरणाय सम्यक्संकल्प–सम्यग्वचन–सम्यक्कर्मान्त–सम्यग्जीव–सम्यग्व्यायाम–सम्यक्स्मृति–समाधिरूपा अष्टावुपायाः प्रदर्शिताः। पूर्वमीमांसामते संसारो दुःखमयः सुखस्य धाम तु स्वर्ग एवास्ति। अत एव तत्प्राप्तये तत्र "स्वर्गकामो यजेत" इत्यादिना यज्ञायोपदेशः सङ्गच्छते। न्यायदर्शननयेऽपि संसारो दुःखबहुल एवास्ति। मिथ्याज्ञानमेवास्ति दुःखस्य मूलम्। तन्निवृत्तये एकमात्रमुपायश्च प्रमाणप्रमेयादिषोडशपदार्थानां तत्त्वज्ञानोपलब्धिरेव। वैशेषिकदर्शननये तु दुःखस्यात्यन्तिकनिवृत्तिरेव निःश्रेयसं तत्प्राप्तिश्च तत्त्वज्ञानादेव भवति। सांख्यदर्शनं हि प्राणिमात्रमाध्यात्मिकादित्रिविध दुःखाभिभूतमेव मनुते। तन्मते दुःखात्यन्तनिवृत्तिरेव परमपुरुषार्थः। तत्साधनं तु प्रकृतिपुरुषमहदहङ्कारेकादशेन्द्रियपञ्चमहाभूत–पञ्चतन्मात्ररूप–पञ्चविंशतितत्त्वज्ञानमेव। तन्मते प्रकृतिपुरुषसंयोगाद्दुःखम्, तद्वियोगाच्च कैवल्यं भवति। सांख्यमतानुसारमात्मा स्वच्छस्फटिक इव निर्मलोऽस्ति, न तत्र दुःखादि संभवति, किन्तु जपाकुसुमसान्निध्यात् स्वच्छे स्फटिके रक्तोपरागात् स्वचित्तवृत्त्या सह सम्बन्धेन तत्र दुःखं भवतीति सारबोधिनीकाराः वदन्ति यथा टीकायामाह –

"अयमाशयः पुरुषस्य स्वत एव दुःखं नास्ति, किन्तु अन्तःकरणगतदुःखेनैव अविवेकदशायां पुरुषस्य दुःखाभिमानत्वम् । प्रकृतिपुरुषयोः विविक्तता ज्ञानात्तु दुःखित्वाभिमानिता निवर्तत इति